International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 994-995

नैतिक मूल्यों का मानव जीवन में योगदान

Brij Gopal
North East Frontier Technical University, Arunachal Pradesh, India

प्रस्तावना

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।
परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।।
धर्माथेकाममोक्षाणां यस्यैकोऽपि न विद्यते।
अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम्।।[1]

"भारतीय मनीषा प्रकृति के सामीप्य एवं नैतिकता पर अवलम्बित है। वैदिक ऋषियों से लेकर राम, कृष्ण, महावीर, गौतमबुद्ध, विवेकानन्द इत्यादि अनेकानेक महामानवों ने क्षरित नैतिकमूल्यों की पुनः स्थापना के लिए अपना सर्वस्व समाज को समर्पित किया, लेकिन भोगवादी संस्कृति ने नैतिक मूल्यों में सतत् रूप से क्षरण का कार्य किया है। नैतिक मूल्यों के क्षरण को रोकने एवं उनके सम्वर्धन के लिए संस्कृत साहित्य में बिखरे उपायों को जो महाकवियों ने अपने काव्यों में सुस्थापित किये हैं। शोधकार्य के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाने का सहज उपक्रम किसी भी सुबोध नागरिक का कर्त्तव्य होता है। इसकी शृंखला में प्रस्तुत शोधालेख में महाकवि बाणभअँ द्वारा उनकी कालजयी रचना कादम्बरी में न्यस्थ नैतिक मूल्यों को सामाजिकों के सामने रखने का इस शोधालेख का उद्देश्य है।"

नैतिक मूल्य भारतीय संस्कृति के मूलाधार हैं। चरित्र की श्रेष्ठता के उपादान है। नैतिक मूल्य समस्त विधाओं, शास्त्रों और धर्मों का आधार है। यह सामान्यतः राष्ट्रधर्म है, जिसके पालन के बिना राष्ट्र एवं समाज का विकास होना सम्भव नहल्ल है। वैदिक महर्षियों से लेकर परवतएँ सन्त-महात्माओं ने राष्ट्र के चारित्रिक नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ बनाए रखने के लिए समय-समय पर अनेकानेक उपक्रम किये। नैतिकमूल्यों से आत्मबल प्राप्त होता है। वैदिक युग में नैतिक मूल्यों के अनेक रूप देखने को मिलते हैं। ऋग्वेद के एक मंत्र में ब्रह्म हत्या, मदिरापान, चोरी, गुरुपत्नि-गमन और पापाचार का सर्वथा निषेध किया गया है।[2] समाज द्वारा प्रशंसित कार्य नैतिक मूल्यों की परिधि में आते हैं तथा गर्हित कार्य नैतिक मूल्यों के ह्रास की श्रेणी में।

मन के नियंत्रण से जीवन में संयम और मर्यादादि का उदय होता है तथागत गौतम बुद्ध ने 'पंचशील' को नैतिक मूल्यों के निकष के रूप में मान्य किया। धम्मपद में कहा गया है कि दुःशील और असंयमी होकर राष्ट्र का अत्र खाने वाले के मुख में दहकता हुआ लोहे का गोला डाल देना चाहिए।[3] जीवन की प्रगति के बाधक काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद और मत्सर नामक छः शत्रु है, जैन धर्म में इनको कषाय कहा गया है। प्रत्येक व्यक्ति नैतिक निष्ठ होकर ही सभ्य एवं सुसंस्कारित समाज का निर्माण कर सकता है। यदि समस्त मानव नैतिक मूल्यों का परिपालन करने लगे तो राष्ट्र प्रगति की सारी समस्याओं का समाधान स्वयंमेव हो जाएगा।

संस्कृत साहित्य में सद्काव्य प्रयोजन सहित सृजित किये गये, जिनमें काव्य सुधा के माध्यम से कवि ने सामाजिकों की मंगल कामना को काव्य के केन्द्र में रखा। काव्य के लक्षण ग्रन्थों में काव्य प्रयोजनों में कहा गया 'रामवत् आचरेत न रावणवत्' इसी भाव को ध्यान में रखकर काव्य प्रयोजन में मौलिभूत प्रयोजन 'कान्तासम्मिततयो उपदेशयुजे'[4] को श्रेष्ठ माना गया है, अर्थात्-कवि अपने काव्य के माध्यम से सरस उपदेश शैली के माध्यम से पथ भ्रमित सामाजिकों को सुपथ का दिग्-दर्शन कराते हुए, मंगलकारी मार्ग पर लाने का सहज उपक्रम करते रहते हैं।

पुरातत्व साहित्य कार्यक्षेत्र

महाकवि बाणभअँ द्वारा रचित 'कादम्बरी' रसकों के हृदय को आह्लादित करने के साथ-साथ नैतिक मूल्यों का अपने आप में अद्भुत भण्डार संजोए हुए है। कादम्बरी के पात्रों के माध्यम से लेखक ने सम्पूर्ण मानव समाज को एक नई दिशा दी। कवि हमेशा समाज को विकास के पथ पर ले जाने के लिए विचार करता है और उसे अपने काव्य रूपी संसार में अंकित कर समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है। कहा भी जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। तत्कालीन समाज में जिस प्रकार का कार्य-व्यवहार होता है, उसी को देखकर कवि उसे काव्य में सृजित करता है तथा विकारों को दूर करने के लिए काव्य में नैतिक मूल्यों की सुस्थापना करता है। महाकवि बाणभअँ ने भी यही किया।

कादम्बरी के प्रधान नायक चन्द्रापीड़ को जब नवोदित युवराज के पद पर आसीन किया जाना है, तभी तारापीड का बुद्धिमान प्रधानमंत्री शुकनास चन्द्रापीड को संसार के अनेकानेक नैतिकमूल्य परक उपदेश देता है-यथा-

अभानुभेद्यमरत्नालोकच्छेद्यमप्रदीपप्रभापनेयमतिगहनं
तमोयौवनप्रभवम। अपरिणामोपशमो दारूणे लक्ष्मीमदः।
कष्टमन'जनवर्त्तिसाध्यमपरम् ऐ वर्य्यतिमिरान्धत्वम्।
अशिशिरोपचारहार्य्योऽतितीव्रः दर्पदाहज्वरोष्मा।
सततममूलमन्त्रशम्यः विशमो विशयविशास्वादमोहः।
नित्यमस्नानशौचबाध्यः बलवान् रागमलावलेपः।
अजस्रमक्षपावसानप्रबोधा च राज्यसुखसत्रिपातनिद्रा भवति।
गर्भे वरत्वमभिनवयौवनत्वमप्रतिमरूपत्वममनुषशक्तित्व'चेति।
महतीयं खल्वनर्थपरम्परा। सर्वाविनयानामेषामायतनम् किमुत समवायः।[5]

अर्थात्- युवावस्था में स्वभाव से ही जो अन्धकार उत्पत्र होता है, वह सूर्य द्वारा भगाया नहल्ल जा सकता, किसी मणि के आलोक से भी उसका उच्छेद नहल्ल किया जा सकता एवं प्रदीप की प्रभा से नष्ट नहल्ल किया जा सकता। अतएव वह अन्धकार अत्यन्त दुर्द्धर्श होकर रहता है। धनसम्पत्ति से मद ऐसा भयंकर होता है कि अवस्था क्षीण होने पर भी शांत नहल्ल होता, धनसम्पत्तिरूप नेत्र रोग से जो अन्धता उत्पत्र होती है, वह वास्तविक अन्धता से पूर्ण भित्र है, अंजन की शलाका से भी नहल्ल मिटता, अतएव व अन्धता अत्यन्त कष्ट देने वाली है। धन का अभिमान रूप जो दाहज्वर की गमएँ उत्पत्र होती है, वह चन्दनलेपनादि शीतलोपचार से भी दूर नहल्ल हो सकती, अतएव वह गमएँ अत्यन्त तीव्र होती है।

अनुसधान

स्रक्चन्दन-वनिताप्रभृति विषयरूपी विष के सम्भोग से उत्पत्र हुआ मोह ऐसा विषम होता है कि वह जड़ी-बूटी और मन्त्रों से नहल्ल उतरता, अतः वह मोह सर्वदा ही कठिन है।

विषयासक्ति रूपी मल का लेप ऐसा प्रबल होता है कि वह नित्य स्थान और शुद्धता से भी विनष्ट नहल्ल होता। राज्य सुखानुभवस्वरूप सत्रिपात निद्रा ऐसा भयंकर होती है कि रात्रि का शेष होने पर भी उससे कभी चेतनता नहल्ल होती। बाल्यकालावधि धनसम्पत्ति, नवयौवन, निरुपम सौन्दर्य एवं अमानुषी शारीरिक शक्ति ये सब निश्चय ही विपत्ति के गुरुतर कारण समूह है। इन सभी के बीच में एक-एक अलग-अलग भी सभी प्रकार के दोषों का स्थान है और यदि समष्टि रूप ये सब एकत्र हो जाएँ, तो कहना ही क्या है।

सज्जनों के हृदय प्रायः सभी प्राणियों के प्रति सर्वदा निःस्वार्थ भाव से मैत्री का व्यवहार करने वाले तथा करुणा से अत्यन्त कोमल होते हैं। वे किसी के प्राणों की रक्षा करना परम कर्त्तव्य समझते हैं। मुनि कुमार हारीत एक प्यास से व्याकुल प्राणों की अंतिम सांसें गिन रहा शुकशावक को देखकर अपना नैतिक मूल्य समझते हुए उसे उठाकर जल पिलाने के लिए सरोवर पर ले जाकर जल पिलाया ऐसा कथन तोता शूद्रक के दरबार में कहता है कि- यथा

"मां मुक्तप्रयत्नम् उत्तानित-मुखम् अंगुल्या कतिचित् सलिल-बिन्दूनपाययत्। अध्तभःक्षोदकृतसेक'च समुपजातप्रज्ञम्।[6]

अर्थात्- मैं मरणासत्र होने के कारण अत्यन्त शिथिल हो चुका था, इसलिए उन्होंने स्वयं मुझे उठा लिया और मेरा मुख उठाकर अपनी उंगली से पानी की कुछ बूंदे मेरे शरीर पर भी गिरी थी, उसी शीतलता से मैं होश में आ गया।

पिता अपने पुत्र का पालन-पोषण एवं रक्षा हेतु नैतिक मूल्य समझते हुए सदैव तैयार रहता है, इतिहास इसका साक्षी है। नैतिक मूल्य का निर्वाहन करते हुए वैशम्पायन (शुक) का पिता, पुत्र के रक्षार्थ अपने प्राणों का त्याग करता हुआ दृष्टिगोचर होता है।

स्नेहपरवशो मद्रक्षणाकुलः किंकर्त्तव्याविमूढ़.....मान्तु स्वल्पशरीरत्वाद् भयसत्पीड़िताङ्गत्वात् सावशेषत्वाच्चायुषः कथ्मपि तत्पक्ष-पुटान्तर-गतं नालक्षयत्।[7]

अर्थात्- मेरे प्रेम ने उन्हें इतना विवश कर दिया कि मुझे पंखों से ढककर छाती से चिपका लिया और हक्का-बक्का होकर चुपचाप बैठ गये.... यद्यपि पिता ने अपने बचाव के लिये बार-बार चोंच चला-चलाकर उस पर प्रहार किया, किन्तु अन्त में उस हत्यारे ने टें-टें चिल्लाते हुए पिता को मार डाला।

कादम्बरी में महामुनि भवेतकेतु का मानव समाज के लिए दिया है कि-मैने तो इस पुण्डरीक को केवल पाल-पोसकर बड़ा किया है। पुत्र तो आपका ही है। इसे भी आपसे ही प्रेम है, यह वैशम्पायन का ही रूप है, ऐसा जानकर आप अविनय से इसकी रक्षा करें।

जीवन का एक अमिट नियम है कि विवेक के बिना मोह का नाश नहल्ल होता एवं तप के बिना कुमार्ग की प्रवृत्ति नहल्ल हटती- "सर्व एव हि अविनयप्रवृत्तोऽनुतापात् विना न निवर्तते।"[8] विनय ही संयम और साधना का पथ है।

श्वेतकेतु और जाबालि के रूप में स्वयंनिष्ठ और स्वतः प्रकाश है। उसमें कहल्ल किसी प्रकार का स्खलन नहल्ल है। यही स्वाभाविक ज्ञान की संयमशील स्थिति है।

संदर्भ

1. हितोपदेश (मित्र लाभ), पृ. 25, 29
2. ऋग्वेद, 10/05/06.
3. धम्मपद निरयवग्ग, 22/03
4. काव्य प्रकाश, पृ. 10
5. कादम्बरी, पृ. 313-14
6. कादम्बरी, पृ. 115
7. कादम्बरी, पृ. 103
8. कादम्बरी, (एक सांस्कृतिक अध्ययन-अनु. 341)